International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 4, Issue 2, Mar.-Apr., 2024, pp: 06-08 www.ijhssm.org

समकालीन हिंदी महिला उपन्यासकारों की नारी अस्मिता

उमेश ठाकुर
शोधार्थी, हिंदी विभाग,
राधा गोविन्द विश्वविद्यालय, झारखण्ड

Date of Submission: 24-02-2024 Date of Acceptance: 05-03-2024

नारी प्रकृति का सुंदर उपहार और सृष्टि का आधार है। वैदिक युग में मातृ सत्ता की प्रधानता के समय नारी की सूजनात्मक क्षमता का बड़ा महत्व रहा किंतु कालांतर में संस्कृति और सभ्यता पुरुष अधिकार क्षेत्र में आया। नारी जीवन की सभी अवधारणाएं पुरुष सत्ता द्वारा नियंत्रित होने लगीं।

नारी पिता, पति, बेटे के संरक्षण में रही, उसे स्वतंत्रता नहीं थी। पुरुष के सिवा वह एक कदम भी नहीं चल सकती थी। फिर नारी की लहर आयी और देखते ही देखते नारी अपने अस्तित्व के प्रति सजग हो उठी। आज नारी पुरूष के कन्धे से कन्धा मिलाकर जिंदगी के हर पड़ाव पर स्थित है। नारी जीवन आज भी त्रासदी से चित्रित है। नारी जागरण और प्रगति का आधार पिछड़ी सदी में निर्मित हुआ। आज भी भारत वर्ष में नारी को अपने मौलिक अधिकारों से लेकर सामाजिक अधिकारों के लिए संघर्ष करना पड़ता है। इसी चिंतन को साहित्यकारों ने चित्रित किया है। नारी जीवन में नारी सशक्तिकरण, उसकी शिक्षा, सुरक्षितता, मानसिक व शारीरिक कन्याभ्रूण हल्याएँ, विज्ञापन और ग्लैमर की ओर बढ़ते उसके कदम आदि अहम बातें हमारे समक्ष आती है। अपने पर हुए अत्याचार, शोषण, अन्याय पर अपना मुँह खोलना सीख रही है। नारी पंख पसारकर आसमान में उड़ना चाहती है जिससे नारी अपनी दासता और स्वतंत्रता के बीच की स्थिति में सही मार्ग निश्चित कर रही है। वह जीवन संगिनी बनना चाहती है।

स्त्री साहित्य स्त्री की अनुभूति का साहित्य है है। स्त्री साहित्य ने स्त्री की अस्मिता और अनुभवों को केन्द्रीय महत्व दिया। स्त्री की व्यक्ति के रूप में स्मिता को स्थापित करना, उसकी भावों एवं विचारों को अभिव्यक्ति देना इसका प्रमुख दायित्व है। महादेवी वा वर्मा ने तीस से दशक में श्रृंखला की कड़ियाँश में स्त्री अधिकार एवं स्त्री मुक्ति की आवाज उठायो थी। छठे दशक में कई महिला लेखिकाओं के पदार्पण से स्त्री लेखन में एक नथा उभार आया। मन्नू भण्डारी, कृष्णा सोबती, ममता कालिया, मैत्रेयी पुष्पा, राजी सेठ, नासिरा शर्मा, मृदुला गर्ग, चित्रा मुद्गल आदि ने स्त्री अधिकार और मुक्ति के प्रसंगों को बड़ी सजगता से अभिव्यक्ति दी। अब करुणा की जगह स्त्रियों के अंदर अपनी दुर्दशा के प्रति आक्रोश के भाव प्रकट होते हैं। इस प्रकार, उनके उपन्यासों में आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक गैर बराबरी के विरुद्ध संघर्षशीलता का चित्रण मिलता है।

समकालीन महिला उपन्यासकारों ने विभिन्न स्थितियों से जूझती हुई, अनेक संवेदनाओं के दबाव में बदलती नारी को वास्तविकता के धरातल पर आलेखित किया। अपने आसपास नारी के जिन रूपों का परिचय उनको मिला उसके आधार पर उन्होंने नारी के बदलते रूपों को चित्रित किया। प्रारंभ में उनका विकास क्षेत्र पारिवारिक जीवन रहा। आज महिला उपन्यासकारों का लेखन व्यवस्था के प्रति शेष और यथास्थिति को लेकर शंका की नींव पर खड़ा है। व्यवस्था चाहे पारिवारिक हो या सामाजिक, निर्णय की साझेदारी के लिए स्त्री अपना अधिकार दर्ज करने लगी। स्त्री के इस बदलते स्वरूप को हिंदी उपन्यासों में बड़ी ही कुशलता के साथ दिखलाया है। इस दृष्टि से देखा जाए तो महादेवी वर्मा, मन्नू भंडारी, उषा, प्रियंवदा, प्रभा खेतान, मैत्रेयी पुष्पा, कृष्णा सोबती, चित्रा मुद मुद्गल, सूर्यबाला, ममता कालिया, मृदुला गर्ग, सुनीता जैन आदि का नाम लिया जाएगा जिन्होंने उपन्यासों के माध्यम से नारी के स्वरूप को स्वस्थ अंदाज में सामने रखा है। स्त्री जीवन की भीतरी अंधेरों बदलते में जाकर ओजपूर्ण भाषा से उसकी यंत्रणाओं को शब्दबद्ध करने का प्रयास इन लेखिकाओं ने किया है।

उषा प्रियंवदा के उपन्यास 'पचपन खंबे लाल दीवारें' (सन् 1961) की केन्द्रीय संवेदना है– मध्यवर्गीय परिवार की पढ़ी–लिखी, नौकरी–पेशा, अधिक आयु की अविवाहित लड़की जिसकी मानसिक स्थिति, उसकी पीड़ा, छटपटाहट का बड़ा ही मार्मिक चित्रण इस उपन्यास में हुआ है। 'रूकोगी नहीं राधिका' उपन्यास में लेखिका ने राधिका के भटकाव को ही रेखांकित किया है। पिता से अत्यधिक लगाव रखनेवाली बालिक राधिका बड़े होने पर पिता की दूसरी शादी से नाराज होकर विद्रोह करती है और पिता को अधिक पीड़ा पहुंचाने की कोशिश करती है। वह आधुनिक मनोवैज्ञानिक शब्दावली

में कहा जाए तो 'इलेक्ट्राग्रंथि' से ग्रस्त हो जाती है।[4] अतः कहना अनुचित न होगा कि अनेक बाधाओं का सामना करते हुए स्वयं की मुक्ति का मार्ग तलाशने वाली नारी की कहानी कहना उपन्यास का उद्देश्य है।

महिला उपन्यासकारों के संदर्भ में डॉ0 वैशाली देशपांडे का कथन दृष्टव्य है, ''स्वातंत्र्योत्तर कालखण्ड में जीवन व्यापक परिवर्तन हुआ। महिला उपन्यासकारों के उपन्यास में यह परिवर्तन प्रखरता से प्राप्त होता है। परम्परागत जीवन मूल्य एवं आधुनिक जीवन मूल्य के बीच संघर्षरत नारी की मानसिकता का चित्रण इन उपन्यासों का के प्रमुख विषय रहा है। साथ ही सामाजिक, धार्मिक, पारिवारिक, मानसिक एवं शारीरिक धरातल पर नारी का जो शोषण हो रहा है तथा आज की नारी इस शोषण से अपने आप को मुक्त करने के लिए जो प्रयास कर रही है, उसे महिला उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों का विषय बनाया है।''[5]

नारी जीवन की गाथा का वर्णन कर मन्नू भण्डारी ने उपन्यास कला में 'स्त्री विमर्श' के विषय को गंभीरता से उठाकर नवीन मूल्यों एवं नारी की संवेदनाओं को पाठकों के समक्ष पहुंचाया है। हिंदी साहित्य में महिला उपन्यासकारों में अपना स्थान परिगणित कर मन्नू भण्डारी ने नारी को विकासात्मक भावना से युक्त वैज्ञानिकता एवं नवीन धारणाओं को संस्पर्शित कर उन्हें उग्र रूप में दर्शाया है। इनके संबंध में ज्योतिष जोशी ने लिखा है, ''मन्नू भण्डारी का साहित्य महिला लेखन को एक नये स्तर पर प्रतिष्ठित करता है। प्रेम और जीवन के संवेद्य पक्षों पर सफलतापूर्वक प्रतिष्ठित लेखन के बाद मुन्नू भण्डारी ने 'महाभोज' लिखकर हिंदी उपन्यास को एक ऐसे स्थान पर पहुंचाया जहाँ बहुत कम लोगों की पहुँच होती है।''[6]

सन् 2000 में प्रकाशित उपन्यास 'आवाँ' चित्रा मुद्गल का बहुचर्चित 'नारी संघर्ष' को उद्घाटित करता है। इसका केन्द्रीय तथ्य मध्यमवर्गीय नारी का संघर्षशील जीवन जो महानगरीय परिवेश में तप कर, अपने वजूद से जुड़े सारे अहम सवालों के साथ 'आवाँ' शीर्षक को सार्थक करता, श्रमिक आंदोलन तथा प्रतिष्ठित नेताओं के मार्मिक चित्र लेखिका ने अत्यंत संवेदना के साथ घिनौने रूप पर मार्मिक चित्र लेखिका ने अत्यंत संवेदना के साथ प्रस्तुत किया है।'आवाँ' उपन्यास की समीक्षा करते हुए शिवकुमार मिश्र ने इस उपन्यास को इन शब्दों में परिभाषित किया हैं, ''आवाँ औरत के वजूद से जुड़े सवालों का दहकता–सुलगता दस्तावेज है।''[7]

'आवाँ' में नायिका नमिता, अन्ना साहब, विमला ताई, पवार आदि पात्रों के चित्रण में लेखिका ने वस्तुनिष्ठता के साथ नारी लेखन की अद्भूत प्रतिभा का साक्ष्य तो दिया ही है, साथ ही औद्योगिक मजदुर वर्ग के जीवन संघर्षों तथा मजदूर आंदोलन की विसंगतियों और अन्तर्विरोधों के मूल में, उसके कारणों को उजागर करने में पूरी तटस्थता दर्शायी है।

महिला उपन्यासकारों में मृदुला गर्ग ने नारी को अपने अनुभव तथा यथार्थ के आधार पर चित्रित कर नारी अस्मिता, नारी चेतना को विशिष्टता प्रदान कर स्वयं को एक 'बोल्ड लेखिका' के रूप में प्रमाणित किया है। डॉ0 रामचन्द्र तिवारी ने मृदुला गर्ग के संबंध में लिखा है, ''मृदुला गर्ग ने अपनी पहचान अभिजातवर्गीय नारी के स्वातंत्य, प्रेम–विवाद, वैवाहिक जीवन की एकरसता, अब, ताजगी की तलाश में पर पुरुष की ओर झुकाव तथा प्रेम की अनुभूति के सूक्ष्म विश्लेषण के माध्यम से मानव–जीवन की सार्थकता की तलाश द्वारा बनायी थी।''[8]

स्त्री विमर्श की महत्वपूर्ण लेखिका के रूप में विख्यात प्रभा खेतान ने आओ पेपे घर चले, तालाबन्दी, अग्निसंभवा, छिन्नमस्ता, पीली आंधी, अपने–अपने चेहरे आदि उपन्यासों के माध्यम से नारी की नियति को उद् घाटित करने का प्रयास किया है। नारी अस्मिता की दृ ष्टि से शशिप्रभा शास्त्री, शिवानी, मंजुल भगत, कृष्णा सोबती, दीप्ति खण्डेलवाल, मन्नू भंडारी, उषा प्रियंवदा, निरुपमा सोबती, मेहरुन्निसा परवेज, राजी सेठ, मृदुला गर्ग, ममता कालिया, चित्रा मुद्गल, मृणाल पांडेय, नासिरा शर्मा, सूर्यबाला, प्रभा खेतान, मैत्रेयी पुष्पा, अलका सरावगी, सुनिता जैन, कुसुम अंचल, आदि कुछ ऐसे नाम हैं जिन्होंने अन्य उपन्यासकारों के बीच अपनी महत्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज करायी है। नारी स्वतंत्रता का अर्थ, नारी की शोषण से मुक्ति से लिया जाना चाहिए ताकि वह स्वतंत्र ढंग से जी सके और सोच सके। वह पूर्ण स्वाधीन हो। स्त्री पुरुष से समानता का अधिकार चाहती है। इनके मध्य समानता का भाव स्थापित होने पर ही एक स्वस्थ समाज का निर्माण हो सकेगा। इस भाव को उपरोक्त सभी महिला उपन्यासकारों ने अपनी रचनाओं में प्रमुखता से प्रतिष्ठित करने का सफल प्रयास किया है।

संदर्भ :

1. पाटील, डॉ० कल्पना, हिन्दी साहित्य में नारी विमर्श, शेली प्रकाशन, कानपुर, संस्करण–2019, भूमिका से उद्धृत्
2. वी०, आतिश, समकालीन उपन्यासों में स्त्री विमर्श, प्रिय साहित्य सदन, दिल्ली, संस्करण–2014, पृ०–31
3. वही, पृ०–31, 32
4. पोतदार, डॉ० कुष्णा, अंतिम दशक मे महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में स्त्री–विमर्श, विद्या प्रकाशन, कानपुर, संस्करण–2011, पृ०–28

5. जायसवाल, डॉ० स्मिता, ममता कालिया में उपन्यासों में नारी, विकास प्रकाशन, कानपुर, संस्करण–2017, पृ०–38
6. जोशी, ज्योतिष, उपन्यास की समकालीनता, भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, संस्करण – 2007, पृ०–111
7. सिंह, नामकर, आधुनिक हिंदी उपन्यास, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण–2010, पृ०–148
8. त्यागी, मुक्ता, समकालीन महिला उपन्यासकारों के उपन्यास में नारी–विमर्श, अमन प्रकाशन, कानपुर, संस्करण–2012, पृ०–143